Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

साहित्यशास्त्रा की कसौटी पर रामदरश मिश्र का काव्य

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

साहित्यशास्त्रा की कसौटी पर रामदरश मिश्र का काव्य

Dr. Hem Lata Sharma

Asst. Prof. J.C.M.M - Assandh Distt. Karnal, Haryana-India

----------X----------

प्रत्येक साहित्यकार इसी धरती और समाज का प्राणी होता है। तत्कालीन समाज की मान्यताओं और रूढ़ियों से उसका अटूट सम्बन्ध हो जाता है। उसकी रचना धर्मिता में प्रकारान्तर से युग की प्रतिच्छाया होती है। वह युग की अच्छाइयों के साथ अपने को बांध लेता है तथा बुराइयों के प्रति विद्रोह करता है।

रामदरश मिश्र जी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। कविता, निबन्ध, कहानी, उपन्यास, समीक्षा आदि सभी क्षेत्राों में उन्हें सपफलता मिली है, किन्तु उनके कवि का व्यक्तित्व शीर्ष पर है। मिश्र जी के अनुसार आधुनिक जटिल परिवेश की समस्याओं को व्यक्त करने में कविताएँ असक्षम हैं। यही कारण है कि साहित्ययात्राा के उत्तराद्ध में कथा रचना के प्रति उनकी आसक्ति परिलक्षित होती है, लेकिन यहाँ भी रामदरश मिश्र का कवि–रूप दीप्त होता रहता है।

मिश्र जी के व्यक्तित्व में अलमस्त सरलता है जो उनके किसी भी समकालीन कवि में लक्षित नहीं होती। मिश्र जी की वह अलमस्त सरलता और व्यक्तित्व दर्शन, सभी प्रकार के आवरणों से मुक्त होकर खुलता है, तो ऐसे काव्य की सृष्टि करता है जो अपनी अनुभूति की बेहद ईमानदारी, सादगी और तीव्रता में बड़ा प्रभावकारी सिद्ध होता है। कवि की स्वयं को सम्बोधित करने की निजता तथा आत्म–स्वीकृतियाँ काव्य को बहुत ही आत्मीय और विश्वसनीय बनाती हैं।

रामदरश मिश्र ने एक लम्बी काव्ययात्राा की है। यों तो उनका पहला काव्य संग्रह 'पथ के गीत' प्रकाशित हुआ किन्तु उनकी पहली प्रकाशित कविता है 'चाँद'। कवि का पहला संग्रह 'पथ के गीत' सन् 1951 में प्रकाशित हुआ। यह पहला संग्रह छायावादी प्रभाव के दौर की कविताओं का है इसलिए इसका स्वर मुख्यतः रोमानी तो है, लेकिन इसमें प्रकृति और नारी–प्रेम के साथ–साथ राजनीतिक और सामाजिक चेतना की अनेक कविताएँ हैं।

सन् 1950 के बाद नयी कविता का दौर शुरू होता है। रामदरश मिश्र प्रगतिवादी दृष्टि लेकर नयी कविता की ओर बढ़े थे और कवि की इस दौर की कविताओं का संग्रह ग्यारह साल ;सन् 1962 मेंद्ध आया – 'बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ' नाम से।

तीसरा संग्रह 'पक गई है धूप' 1969 में भारतीय ज्ञानपीठ से आया। 'पक गई है धूप' की कविताओं में अपने समय के दबाव से उत्पन्न टूटन, निराशा, अस्वीकार–बोध दिखाई पड़ता है, लेकिन अकविता और उसकी सहवर्तिनी कविताओं में मोहभंग के नाम पर जो यौन प्रसंगों से संदर्भित अश्लीलता, जिघांसा और निषेध में ही रस लेने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है, वह इन कविताओं में नहीं है।

चौथा काव्य–संग्रह 'कंधे पर सूरज' 1977 में प्रकाशन में आया। इस काव्य–संग्रह में आशा, विश्वास और संघर्ष की अलग तरह की उष्मा लक्षित होती है और इमरजेंसी की विसंगति और कुरूपता पर चोट करने वाली कविताएँ हैं।

सन् 1984 में 'दिन एक नदी बन गया' 1989 में 'जुलूस कहाँ जा रहा है', 1992 में 'आग कुछ नहीं बोलती', 1997 में 'बारिश में भीगते बच्चे' तथा 1999 में 'ऐसे में जब कभी' काव्य–संग्रह प्रकाशित हुए। पहले के संग्रहों की तरह इन सभी संग्रहों की कविताएँ कविता की मूल प्रकृति से जुड़ी होने के बावजूद अपने अनुभवों और विचारों में नयापन लिये हुए हैं। लोक–जीवन के प्रति उनका लगाव उन्हें और उनके साहित्य को निरन्तर ताजा बनाए हुए हैं। इन संग्रहों में गीत और गीतेतर कविता की सहउपस्थिति लगातार बनी हुई है।

कवि ने अपनी काव्य–यात्राा में गज़लें भी लिखी हैं। सन् 86 में 'बाजार को निकले हैं लोग' प्रकाशित हुआ। पिफर 1997 में 'हँसी ओठ पर आँखें नम हैं' प्रकाशन में आया। गज़ल कवि की मुख्य विधा नहीं है।

काव्य में उपयुक्त भावों को भाषा में अभिव्यक्त करना अतीव परिश्रम की अपेक्षा रखता है। कवि के मन में जब भावों का उद्वेलन होता है, तो वह उन्हें अभिव्यक्त करना चाहता है, परन्तु कई बार छन्द, अलंकार व भाषा आदि तत्त्वों को समुचित योजना नहीं मिल पाती और छन्दादि की अनिवार्यता का ध्यान रखते हुए शब्दों को बदलना पड़ जाता है और शब्द परिवर्तन के साथ ही भाव भी परिवर्तित हो जाते हैं। परिणामतः कवि जो कहना चाहता है, उस उद्बु(भाव को यथावत् नहीं कह पाता। भाषा और भाव की इस संयोजना में जो व्यक्ति सपफल होता है, वही कवि कहलाता है। विद्वानों ने काव्य के सूक्ष्म एवं सर्वांगीण चिन्तन द्वारा कुछ ऐसे तत्त्वों का निर्धारण किया है, जो काव्य में उत्तरोत्तर श्रेष्ठता के विधायक हैं। ये तत्त्व रस, अलंकार, छन्द, शब्द शक्ति, काव्य भाषा, रीति, गुण आदि के नाम से जाने जाते हैं, जो साहित्यशास्त्रीय या काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में स्थान पाते हैं। इन्हीं सि(ान्तों के आधार पर किया गया काव्यगत–अध्ययन ही साहित्यशास्त्रीय अध्ययन कहलाता है। काव्य–आलोचना या साहित्य–समीक्षा का सै(ान्तिक रूप ही काव्य–शास्त्रा या साहित्य–शास्त्रा कहलाता है।

'रस सिद्धान्त' भारतीय काव्यशास्त्रा का प्रमुख सिद्धान्त है। वीर, श्रृंगार, करुण, रौद्र, वीभत्स, शान्त, अद्भुत, भयानक, हास्य, वात्सल्य और भक्ति ग्यारह रस माने जाते हैं। मिश्र जी ने अपने काव्य में इन सभी रसों का सकुशल प्रयोग किया है।

'अलंकार–सि(ान्त' सदैव 'रस–सिद्धान्त' का प्रतिद्वन्द्वी रहा है। आचार्य रूय्यक ने अलंकारों की कतिपय निश्चित कोटियाँ निर्धारित की है। यथा–चमत्कारमूलक, साम्यमूलक,

www.ignited.in

अतिशय–मूलक, औचित्यमूलक, विरोधमूलक, वक्रतामूलक। मिश्र जी के काव्य में चमत्कारमूलक में अनुप्रास तथा यमक, पुनरुक्ति तथा धवन्यर्थ व्यंजना का, साम्यमूलक में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का बाहुलता में प्रयोग हुआ है।

छन्दों का काव्य में बहुत महत्त्व है। वस्तुतः दोनों का सम्बन्ध आकस्मिक न होकर अनिवार्य एवं अति प्राचीन है। मिश्र जी ने अपने काव्य में छन्दों का सपफल प्रयोग किया है। उन्होंने आल्हा, ताटक, समान सवाई, विधाता, सार, हाकलि, माधव मालती, हरिगीतिका तथा मिताक्षरी सभी छन्दों का प्रयोग उचित ढंग से किया है। यों तो मिश्र जी के काव्य में छन्दों का सपफल प्रयोग हुआ है। लेकिन प्रधानता वीर अथवा आल्हा, ताटक तथा समान सवाई छन्दों की ही रही है।

शब्दशक्तियाँ अभिव्यंजना की विधायिका है। किसी शब्द का अस्तित्व और महत्त्व उसके द्वारा ज्ञात होने वाले अर्थ पर निर्भर होता है। अतः शब्द का अस्तित्व ही अर्थ को जन्म देता है। शब्द–शक्तियाँ तीन प्रकार की स्वीकार की गई हैं–अभिधा, लक्षणा, व्यंजना। मिश्र जी के काव्य में व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग अधिक मात्राा में हुआ है। लेकिन लक्षणा तथा अभिधा शब्द शक्तियों से अछूते रहे हो ऐसा भी नहीं हैं।

काव्य भाषा में काव्य भाषा जन भाषा का अन्तर, काव्य भाषा के वैशिष्ट ्य को बताते हुए यह बताया गया है कि मिश्र जी का काव्य सोद्देश्य है। कवि ने विषय एवं प्रतिपाद्य के अनुरूप काव्य भाषा का प्रयोग किया है। मिश्र जी ने युगानुरूप एवं समाज–सापेक्ष भाषा का प्रयोग किया है। संस्कृत, अरबी, उर्दू, पफारसी तथा अंग्रेजी भाषाओं के शब्दों के मेल से उनकी काव्य–भाषा की रचना हुई है।

काव्यगुणों की संख्या तीन मानी गई है। मिश्र जी के काव्य में ओज, माधुर्य एवं प्रसाद तीनों गुणों का यथोचित प्रयोग हुआ है। लेकिन मिश्र जी के काव्य में ओजगुण एवं प्रसाद गुण की प्रधानता लक्षित होती है।

वृत्ति–रीति एवं गुण का सीधा सम्बन्ध होता है। रीति के तीन प्रमुख भेद माने जाते हैं–वैदर्भी, गौड़ी तथा पांचाली। वैसे तो मिश्र जी के काव्य में तीनों ही रीतियों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। लेकिन वैदर्भी एवं पांचाली रीति की अधिकता दृष्टिगोचर होती है। गुणों एवं रीतियों का समुचित प्रयोग मिश्र जी की प्रतिभा, कुशलता एवं प्रवीणता का परिचायक है।

मिश्र जी के काव्य का विश्लेषण एवं मूल्यांकन अलग–अलग आधारों पर किया गया है। लेकिन बिम्ब एवं प्रतीक का महत्त्व उनके काव्य में विशेष रूप से दिखाई पड़ता है। मिश्र जी के काव्य में सुन्दर बिम्ब योजना देखने को मिलती है।

मिश्र जी की कविताओं का मूल्यांकन करते हुए हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि वह बहुआयामी है। कभी–कभी जहाँ कविताओं पर अधिक जोर दिया गया है, वहाँ थोड़ी–सी सपाट बयानी आ गयी है, अन्यथा शिल्प सुगठित, संग्रथित और प्रभावोत्पादक है। भाषा भावानुकूल संदर्भित एवं यथार्थपरक है। काव्य शैली समग्र रूप में वस्तुनोमुखी तर्कनिष्ठ, चुस्त एवं अनुभूति व्यंजक है। कविता की शब्दावली भाव–व्यंजक, सघन और सार्द्र है।

निःसंदेह साहित्यशास्त्रीय सि(ान्तों की कसौटी पर रामदरश मिश्र जी के काव्यों के लिए यह कहना अनुचित न होगा कि मिश्र जी एक सपफल, कुशल रचनाओं के सपफल रचनाकार है।